International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

माध्यमिक स्तर के बच्चों पर सोशल मीडिया का प्रभाव

डॉ. भूमिका मिश्रा[1], श्रीमति ममता शर्मा[2]

[1]सहायक प्राध्यापक, [2]शोधार्थी
समाजशास्त्र विभाग
भारती विश्वविद्यालय दुर्ग

सारांशः–

सोशल मीडिया संचार का सबसे बड़ा साधन हैं देष विदेश से लोग इसके माध्यम से एक दूसरे से जुड़ सकते है इसके अलावा सोशल मीडिया ने किशोरों को महामारी के दौरान ज्यादा जुड़ाव महसूस करने और अकेलेपन से दूर रहने में मद्द की लेकिन युवाओं पर सोशल मीडिया का असर मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी काफी हानिकारक हो सकता हैं अगर साकारात्मक इन में देखे तो सोशल मीडिया किशोरों के शिक्षा व सामाजिक जुड़ाव मे मद्द कर सकता है। उनके विचार में परिवर्तन साकारात्मक व नकारात्मक दोनों रूप में देखने को मिल सकता है। किशोंरो को लगता है कि सोशल मीडिया हमारे सलाहकार के रूप में हमारा साथ देता हें जो उनके जीवन में फायदे व नुकसान दोनों रूप में आती है। उसमें मुख्य रूप से उनका व्यक्तित्व एवं समायोजन का समावेश ही मुख्य रूप शामिल है और यही समस्या की पृष्ठभूमि का आधार व अध्ययन का विषय है।

प्रस्तावनाः–

आज का युग सोशल मीडिया का युग है अतः यह हमारी जरूरत बन चुकी है पौराणिक कथाओं में अपने विचार व्यक्त करने के लिए लोग, चॉद, सूरज, मेघ, हवा, धूप आदि का उदाहरण देकर संदेश को दूसरे तक पहुंचाने में इन सभी का योगदान लिया जाता था। अतः इन माध्यमों से अपने विचारों भावनाओं और संदेशों को एक दूसरे तक संप्रेषित किया करते थे। संवाद के माध्यम तकनीक के साथ बदलते चले गए। कहा जाता है आदिमानव के काल से वह 21वीं शताब्दी में कहां से कहां पहुंच गया है 2000 के दशक के शुरू में साफ्टवेयर पहली बार सोशल मीडिया की चर्चा जब 1994 में सबसे पहले सोशल मीडिया जी.ओ साइट के रूप में सामने आया। परन्तु आज फेसबुक ट्विटर, गूगल प्लस यु ट्यूब, व्हाट्सएप्प, टेलीग्राम जैसी तमाम सोशल मीडिया साइट्स दुनिया को एक सूत्र में बॉध रही है। सूचना के आदान प्रदान लोगों को आपस में जोड़ने का कार्य कर रहा है। नये ढ़ंग से (संपर्क) करने में सोशल मीडिया एक सशक्त और बेजोड़ उपकरण के रूप में तेजी से उभर रहा है। सोशल साइट एक शांतिपूर्ण परिर्वतन सीखने व सिखाने तथा भविष्य की पीढ़ियों को तैयार करने के क्षेत्र में विश्व व्यापक स्तर पर नई उपलब्धि है। कहा जाता है कि अब वह समय आ गया है जब सबसे बड़ी शक्ति मनुष्य की मस्तिष्क की होगी जो दिमाग का सही उपयोग कर सकेगा। सोशल मीडिया के इस नेटवर्क ने सभी यूजर्स खासतौर से युवाओं को अभिव्यक्ति का सशक्त मंच दिया हैं युवाओं ने इसे सवांद के साथ ही सृजन का भी माध्यम बनाया है। जब सम्पूर्ण विश्व में युवाओं और सोशल मीडिया की बात की जाए तो भारत पहले पायदान पर बना हुआ है। कारण साफ है कि भारत युवाओं का देश है। देश की कुल आबादी का लगभग 70 प्रतिशत भाग 35 वर्ष से कम आयु का है। यह युवा अपने आबादी के साथ अनूठे जनसांख्यिकी लाभ के द्वार पर खड़ा है। देश का सरकारी तंत्र युवाओं के इस रूचि को देखते हुए सरकारी योजनाओं को सोशल मीडिया के माध्यम से विद्यार्थीयों तक पहुंचाने की कोशिश कर रहा है। भारत में सोशल साइट (Facebook, Whatsup, Email) आदि का प्रभाव बढ़ता ही जा रहा है। जिससे विद्यार्थियों पर सकारात्मक के साथ–साथ नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। मानव व्यक्तित्व को प्रतिबिंबित करने के लिए फेसबुक प्रोफाइल एक महत्वपूर्ण उपकरण हैं। शब्द व्यक्तित्व वास्तव में लैटिन शब्द से निकला है। जो एक कलाकार की विभिन्न भूमिकाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए नाटकीय टोपी के लिए खड़ा है।

हॉल और लिन्से ने बताया कि व्यक्तित्व की कई व्याख्याएं है क्योंकि विभिन्न सिद्धांतकारों ने इसकी अलग–अलग व्याख्या की है। इसके अलावा हम आमतौर पर व्यक्तित्व का वर्णन लक्षणों या विशेषताओं के संग्रह के रूप में करते है। जैसे कि व्यवहार भावनाएं विचार पैटर्न और भावनाएं जो किसी व्यक्ति के लिए विशिष्ट है। इन नकारात्मक प्रभावों के प्रति लोगों का सचेत होना बहुत जरूरी है।

इंटरनेट हब के द्वारा विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की जानकारियां प्राप्त होती है। ये क्षेत्र निम्नवत है। व्यापार खेल–जगत, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि, विदेश, रक्षा, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, फिल्म, मनोरंजन, अपराध, सामाजिक घटनाएं आदि जिसके बारे में केवल पुस्तकीय ज्ञान पर्याप्त नहीं होता है। अतः सोशल साइट विद्यार्थियों के ज्ञान क्षेत्र को विस्तृत बनाने है। यह ज्ञान कुछ हद तक तो उचित है किन्तु कुछ हद तक अनुचित भी है। विद्यार्थी वर्ग पर इंटरनेट हब का उनके व्यक्तित्व एवं समायोजन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। एवं उस प्रभाव से उनके जीवन शैली किस प्रकार परिवर्तित हो रही है। यह परिवर्तन उसके लिए लाभ प्रद है या नही? इन विभिन्न प्रश्नों का हल करने में संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन इसी आवश्यकता का ही परिणाम है।

वर्तमान में किशोर स्तर के विद्यार्थी जो कि सोशल मीडिया के मुख्य उपयोगकर्ता है। वे अपने साथ कुछ उद्देश्यों को लेकर चल रहे है। इन उद्देश्यों में सामाजिक उद्देश्य व शैक्षिक उद्देश्य शामिल होते है। इन्ही दोनों पर आधारित उनकी समस्त क्रियाएं सम्पादित होती रहती है। वास्तविकता में सोशल मीडिया का विभिन्न रूपों में उपयोग विद्यार्थियों को कई तरीकों से प्रभावित करता है। वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन पर सोशल मीडिया कैसे प्रभाव डालता है। की जांच करना है। समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया और क्षमता का भाव है। जो बालक का उसकी अपनी योग्यताओं और क्षमताओं के संदर्भ में उसकी अपनी परिस्थितियों के अनुसार उसे आगे प्रगति के मार्ग पर ले जाने में सहायता करती है। व बालिका के जीवन में यह प्रक्रिया कभी रूकने का नाम नहीं लेती क्योंकि जीवन कभी रूकता नहीं है और परिवर्तनों के साथ–साथ ही समायोजन की प्रक्रिया को भी बदलना पड़ता है। इस परिवर्तन और अनुकूलन क्षमता में बच्चे का सर्वांगीण विकास उसकी प्रगति संतुष्टि और खुशी के लिए जिम्मेदार होता है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च स्तर के अध्ययनरत विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया कई तरीकों से अपना प्रभाव डालता है। और उसमें मुख्य तरीकों से अपना प्रभाव डालता है। और उसमें मुख्य रूप से उनका व्यक्तित्व एवं समायोजन का समावेश ही मुख्य रूप शामिल है और यही समस्यां की पृष्ठभूमि का आधार व अध्ययन का विषय है।

साहित्य का पुनरावलोकनः–

हेफनर, टारा. (2016) ने अपने शोध द इफेक्ट ऑफ सोशल मीडिया यूस इन अण्डर ग्रेज्यूएट स्टूडेंट में बताया कि सोशल मीड़िया का उपयोग शैक्षणिक कुण्ठा को नियत्रित करने में सहायक हो सकता हैं, विशेष रूप से यदि विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियों से जुड़ा हो जिनकी समान समस्या हो। सोशल मीडिया विद्यार्थियों को अन्य विद्यार्थियों से जुड़ने का अवसर प्रदान करता है. जो की बहुत ही उपयोगी हो सकता हैं क्योंकि यह उन्हें कक्षा से सम्बन्धित मुद्दों पर सोशल मीड़िया के माध्यम से विचार–विमर्श करने की सुविधा देता हैं।

कुप्पूस्वामी सुनीथा (2010) ने किशोरों की शिक्षा पर सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट के प्रभाव का अध्ययन किया। शोध में पाया कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स, ऑरकुट, फेसबुक, मायस्पेस और यूट्यूब आदि किशोरो के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहा है तथा अब यह दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुका है । लोग सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति आकर्षित हो रहे हैं। इस शोधकर्ता ने सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रभाव का अध्ययन किया है। अध्ययन से पता चलता है कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स किशोरों को उनके अध्ययन से भटकाती हैं। हालांकि इसका एक अच्छा अच्छा पक्ष भी है अधिकांश किशोरो सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर यूट्यूब आदि के माध्यम से अपने ज्ञान में वृद्धि भी करते हैं। इस तरह सोशल नेटवर्किंग साइट्स का सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह का प्रभाव है जरूरत है उसके सकारात्मक तरीके से उपयोग की।

झा जे. जयपुरिया, एन. झा और सिंहा पी. (2016) ''इंटरनेशनल जनरल ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकशन (0975–8887) इंटरनेशनल कॉन्फेस ऑन एडवांसेस इनफर्कामेशन टेक्नोलॉजी एण्ड मेनेजमेण्ट, 2016 में स्पष्ट किया कि विद्यार्थी सोशल मीडिया से निश्चित रूप से अधिक प्रभावित होता हैं। कुछ सीमा तक यह महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की ग्रेड़ में वृद्धि को निश्चित तौर पर प्रभावित करता हैं। साथ ही उन्होने कहा कि सोशल मीडिया इतना आकर्षक है कि यह महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को मित्र बनाने हेतु एक अलग दुनिया देता है. साथ ही तनाव को कम करने हेतु एक अच्छा साधन प्रदान करता हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि सोशल मीडिया और शैक्षणिक अध्ययन में संतुलित सम्बन्ध हेतु एक सही दृष्टिकोण का होना भी आवश्यक हैं। इसके लिए महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को सोशल मीडिया और ऐकेडमियन के मध्य संतुलन हेतु अधिक विचार करना चाहिए।

सुधा, एस. तथा कविथा ई.एस. (2016) ''द इफेक्ट ऑफ सोशल नेटवर्किंग ऑन स्टूडेण्ट ऐकेडमिक परफॉरमेंसरू द पर्सपेक्टीव ऑफ फेकल्टी मेम्बर्स ऑफ पेरियार यूनिवर्सिटी, सेलम'' के अपने शोध में है कि अधिकांश फेकल्टी मेम्बर्स यह विश्वास करते हैं कि विद्यार्थियों और शिक्षकों में जागरूकता की कमी तथा शैक्षणिक रूचि के विषयों पर सहा न कर पाने सोशल मीडिया के सही उपयोग न कर पाने के कारण सोशल मीडिया विद्यार्थियों के शैक्षणिक कार्य पर तुलनात्मक रूप से सकारात्मक प्रभाव के स्थान पर नकारात्मक प्रभाव अधिक रखता हैं। इस दौरान उनके शैक्षणिक कार्य निष्पादन पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव सही रूप से दिखता हैं।

चतुर्वेदी जगदीश्वर (2006) मानते हैं कि, इंटरनेट ने ही साइबर अपराध को बढ़ा दिया है। साइबर अपराधों को आसानी से पकड़ पाना मुश्किल होता है। ऑस्ट्रेलिया में किए गए सर्वेक्षण से पता चला है, कि सर्वे में शामिल कुल उत्तरदाताओं में से 42 फीसदी लोगों का मानना है कि वह साइबर अपराध के खिलाफ कोई शिकायत नहीं करते हैं। सिटीबैंक के एक सर्वे के अनुसार ऑस्ट्रेलिया के 60 प्रतिशत लोग इंटरनेट पर भरोसा नहीं करते हैं, इसीलिए अपने क्रेडिट कार्ड का विवरण इंटरनेट पर नहीं डालते हैं जिसका परिणाम आस्ट्रेलिया में यह हुआ कि ई कॉमर्स का विकास उस तीव्रता से नहीं हो सका जैसा कि होना चाहिए था।

सचदेव रुचि (2008) ने भारत में किशोरों पर सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रभाव पर एक शोध कार्य किया। शोध का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना था कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स समाज के लिए उपयोगी है या फिर अनुपयोगी। सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने रोजगार सृजन व्यक्तित्व विकास वाणिज्य, सूचनाओं के आदान–प्रदान आदि दृष्टिकोण से लोगों को सुविधा प्रदान की है किंतु सोशल नेटवर्किंग साइट से कई आंतरिक सूचनाएं सार्वजनिक हो सोशल जाती हैं. जहां एक तरफ सोशल नेटवर्किंग साइट्स लोगों को एक साथ करने की सुविधा प्रदान करती हैं तो दूसरी तरफ साइबर अपराध के लिए भी यह एक ठोस प्लेटफार्म प्रदान करती हैं इसलिए यहं इस दिशा में और कार्य करने की आवश्यकता है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के फायदे और नुकसान दोनों हैं तथा इसे सही तरीके से लागू किया जा सकता है और किशोरो को लाभ पहुंचाया जा सकता है।

विषय का समाजशास्त्रीय महत्व

किसी भी शोध कार्य के लिए समस्या का चयन महत्वपूर्ण स्थान रखता है। किसी भी कार्य को करने के पीछे कोई न कोई कारण होता है। वर्तमान समय में सोशल मीडिया सबसे अधिक प्रचलित व सशक्त माध्यम है। सोशल मीडिया का विद्यार्थियों पर बहुत अधिक प्रभाव दिखाई देता है। सोशल मीडिया के विकास के साथ–साथ समाज में परिर्वतन हो रहा है। विशेषकर विद्यार्थी वर्ग पर इसका अमिट प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार से हुआ है। वर्तमान में सोशल मीडिया के साधन प्रत्येक घर में उपलब्ध है। जिससे इन साधनों का प्रभाव जीवन के हर पक्ष (सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक इत्यादि) पर दिखाई देता है।

इसके माध्यम से जहां हमें नवीन जानकारियों का पता लगता है। वही दूसरी तरफ नयी परम्पराएं (सांस्कृतिक तथा सामाजिक) तथा अनेकानेक नवीन समस्याओं का भी पादुर्भाव हुआ साथ ही हमारे सामाजिक मूल्यों का ह्रास दिखाई देता है। सोशल मीडिया से होने वाले लाभ के संदर्भ में भी कहा जा सकता है। सोशल मीडिया के माध्यम से विद्यार्थी अपने ज्ञान में तो वृद्धि कर रहे है। परन्तु कु अनेक ज्ञान में तो वृद्धि कर रहे है। परन्तु कुछ अनेक अपराधिक कार्यो में लिप्त होते जा रहे है। अतः विद्यार्थियों पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव पड़ रहे है। इसलिए इस तथ्य को ध्यान में रखकर इस समस्या पर ध्यान केन्द्रीत किया प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा सोशल मीडिया के सारे प्रभावों की जॉच करना है। जिससे यह समझा जा सके कि वे सकारात्मक पड़ रहे है। या नकारात्मक उन्हें जानकर व समझकर ही सोशल मीडिया के उपयोग की सीमाओं को निश्चित किया जा सकता है। जिससे उनके व्यक्तित्व एवं समायोजन में तो वृद्धि होगी ही। इसके साथ ही साथ शिक्षक स्वयं भी अपने विद्यार्थियों के साथ परस्पर वार्ता स्थापित करने में सोशल मीडिया का यथोचित उपयोग कर पाऐगें। प्रस्तुत शोध के माध्यम से माता–पिता भी अपने बच्चों की देख–रेख कर पाऐंगे व उन्हें सही मार्ग देने में सहायता करेंगे। इस तरह से विद्यार्थी शिक्षक तथा माता–पिता को सोशल मीडिया से होने वाले लाभ के संदर्भ में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समाज में समायोजन पर सोशल मीडिया के प्रभाव संबंधी समस्या को चुनना एक औचित्यपूर्ण कदम कहा जा सकता है।

विद्यार्थीयों के व्यक्तित्व एवं समायोजन केवल दी जाने वाली शिक्षा से ही नहं होता वरन् वह अपने आस–पास के वातावरण से भी सीखता है। जिसमें सोशल मीडिया के साधनों में आई क्रान्ति की भी महत्वपूर्ण भूमिका हैं टेलीविजन, रेडियों, कम्प्यूटर आदि भी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते है। जो छात्र नियमित रूप से सोशल मिडिया का इस्तेमाल करते है। उनका बौद्धिक स्तर निश्चित रूप से उन बच्चों में बहुत उर्जा होता है जो छात्र सोशल मीडिया का इस्तेमाल नही करते है। हाल ही में हुए कुछ अनुसंधान से यह भी निष्कार्ष निकला है। कि सोशल मीडिया का छात्रों की अध्ययन आदतों पर पूरा–पूरा प्रभाव पड़ता है। ज्यादा सोशल मीडिया के इस्तेमाल से छात्र कई तरह की बीमारियों से ग्रसित हो जाते है जिससे उनका अध्ययन प्रभावित होता है। अतः वर्तमान अध्ययन आवश्यक व महत्वपूर्ण है।

अध्ययन का उद्देश्यः–

1. विद्यार्थियों में सामाजिक व आर्थिक पृष्ठभूमि ज्ञात करना।
2. विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करना।

परिकल्पनाः–

1. विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव नकारात्मक प्रभावों से अधिक है।
2. विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव गंभीर नहीं है।

अध्ययन पद्धति

अध्ययन का क्षेत्र –प्रस्तावित शोध प्रबंध का अध्ययन क्षेत्र के लिए हमने हत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर रूप में चयन किया प्रस्तुत शोध प्रबंध में छत्तीसगढ़ के रायपुर नगर में स्थित माध्यमिक स्तर से संबंधित विभिन्न विद्यालयों में 6वीं और 7वीं, 8वीं कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थी का चयन अध्ययन के समग्र के रूप में किया गया है।

अध्ययन की इकाई –प्रस्तुत शोध अध्ययन में अध्ययन की इकाई रायपुर नगर के विभिन्न विद्यालयों में माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत विद्यार्थी है।

निदर्शन विधि–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत शोधकर्ता ने समस्या के निदर्शन विधि हेतु दैव निदर्शन की लाटरी प्रणाली द्वारा इस विधि का प्रयोग कर शोध कार्य किया गया जिसमें प्रत्येक माध्यमिक स्तर के उत्तरदाताओं के रूप में छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिला के नगर निगम के अन्तर्गत आने वाले 1226 निजी विद्यालयों में से 10 विद्यालयों का चयन किया गया जिसमें छात्र व छात्राओं की संख्या 320 विद्यार्थियों का चयन किया गया शोध कार्य कक्षा 6वी, 7वीं, 8वीं अध्ययनरत विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन व जनसंख्या के रूप में दैव निदर्शन की लाटरी पद्धति के माध्यम से 10 विद्यालयों का चयन कर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं का चयन कर तथ्यों का संकलन किया गया।

उत्तरदाताओं का शैक्षणिक स्तर

बच्चों का शैक्षिक स्तर उनकी शिक्षा के दौरान हासिल किए गए ज्ञान और कौशल का स्तर ज्ञात करना है। इसमें विभिन्न चरणों में बच्चों की शैक्षिक प्रगति का वर्णन किया जाता है, जैसे कि प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, और उच्च शिक्षा। यह उनकी पढ़ाई में प्रदर्शन, सीखने की क्षमता और उनकी शैक्षिक उपलब्धियों का एक व्यापक माप है।

कमांक	**उत्तरदाताओं का शैक्षणिक स्तर**	**छात्र**	**छात्रा**	**कुल विद्यार्थी**	**प्रतिशत**
1.	छठवीं	60	52	112	35
2.	सातवीं	70	58	128	40
3.	आठवीं	30	50	80	25
	कुल योग	**160**	**160**	**320**	**100**

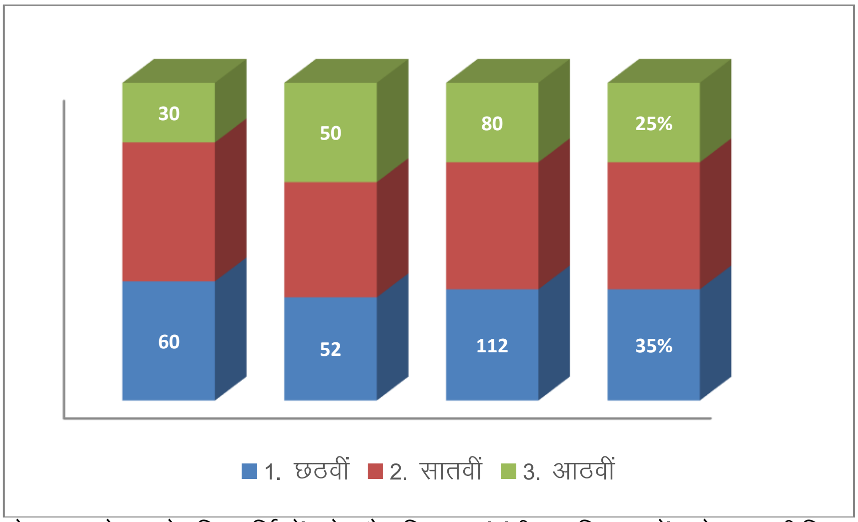

सोशल मीडिया का उपयोग करने वाले विद्यार्थियों के शैक्षणिक संबंधी तालिका में सोशल मीडिया के उपयोग से उन पर पढ़ने वाले प्रभावों को ज्ञात करने हेतु माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कक्षा–छठवीं, सातवीं व आठवीं के विद्यार्थियों को इस शोध में शामिल किया गया जिसमे छठवीं के 35 व सातवीं 40 आठवीं 25 विद्यार्थी थें।

उत्तरदाताओं के लिंग

विद्यार्थियों में सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर सबसे ज्यादा कौन उपयोग छात्र/छात्रायें करती है। जिससे उत्तरदाताओं की लिंग संबंधी विवरण है–

कमांक	लिंग	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	छात्र	160	50
2.	छात्रायें	160	50
योग		320	100

सोशल मीडिया के उपयोग एवं उसके प्रभाव का लिंग से कोई संबंध है अथवा नहीं। इस तथ्य को ज्ञात करने हेतु शोधार्थी द्वारा अपने शोध में सम्मिलित उत्तरदाताओं के लिंग संबंध सूचना का संकलन किया गया जो कि सारणी अनुसार इस प्रकार है। स्पष्ट है कि शोध में सम्मिलित उत्तरदाताओं में सर्वाधिक 55 प्रतिशत छात्र व 45 प्रतिशत छात्राऐ थी।

उत्तरदाताओं की पारिवारिक पृष्ठभूमि

परिवार शब्द ऐसी जिसमे बोलने व समझने में हमें सबसे पहले पति–पत्नी व बच्चों सहित निवास करते है। तथा एक साथ मिलकर अपने कार्य का निर्वाह करते है।

कमांक	परिवार का प्रकार	विद्यार्थियों की संख्या	विद्यार्थियों का प्रतिशत
1.	संयुक्त परिवार	128	40
2.	नाभिकीय (एकल) परिवार	192	60
		320	100

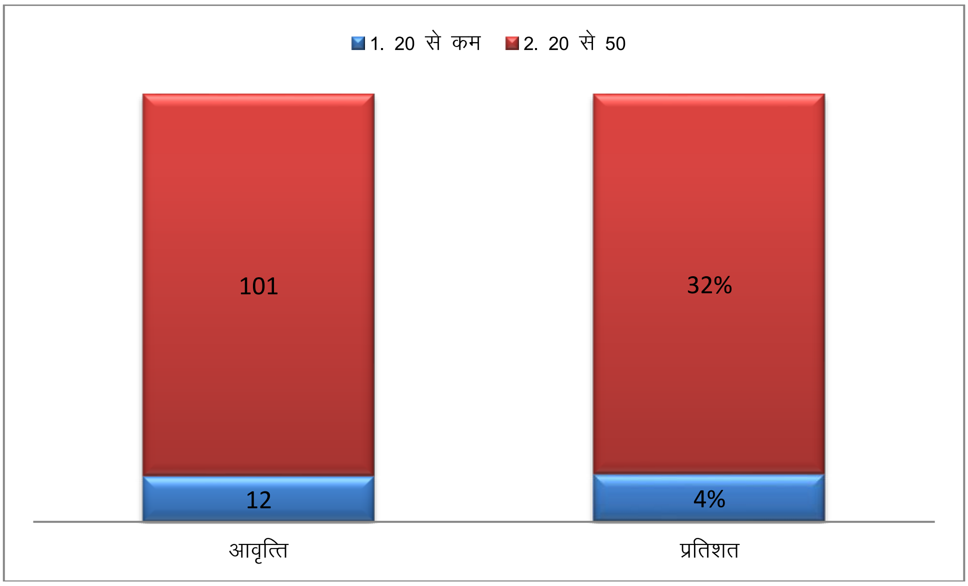

प्रस्तुत शोध में सम्मिलित उत्तरदाताओं की पारिवारिक पृष्ठभूमि में संयुक्त परिवार 40 प्रतिशत तथा 60 प्रतिशत परिवार एकल परिवार के है।

सोशल मीडिया का सामाजिक रहन सहन पर प्रभाव

बच्चों में सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग से उनके समाजिक रहन–सहन भी प्रभावित होते है जो सकारात्मक व नकारात्मकता लिये हुये होती है। जिससे कपड़े पहने से लेकर खाने पीने व बातचीत में प्रभाव दिखता है। जिसका व्यापक माप है।

क्रमांक	विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	सकारात्मक	74	23
2.	नकारात्मक	80	25
3.	सकारात्मक व नकारात्मक दोनों	136	43
4.	कोई प्रभाव नहीं	30	9
	कुल योग	**320**	**100**

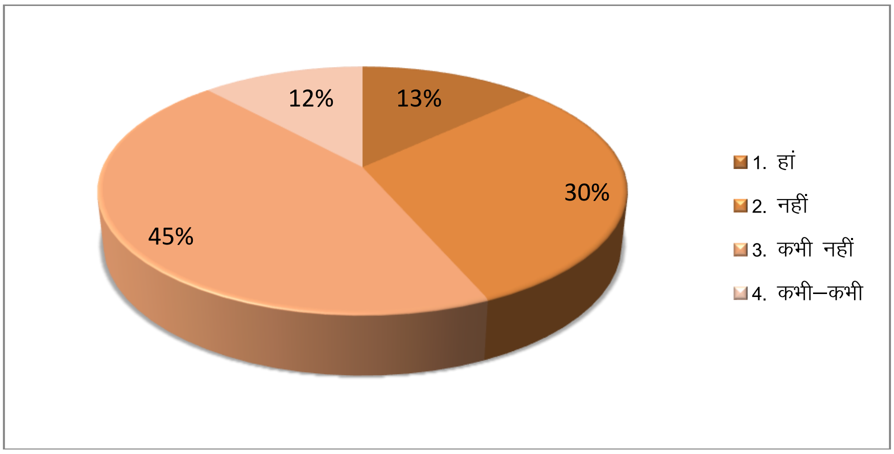

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि 43 प्रतिशत उत्तरदाताओं को लगता है कि सोशल नेटवार्किंग साइट का सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव हमारी संस्कृति पर पड़ता है। 23 प्रतिशत सकारात्मक एवं 25 प्रतिशत नकारात्मक मानते है। जबकि 9

प्रतिशत लोगों को लगता है कि कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। अत उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि सोशल मीडिया का सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव हमारे पर पड़ता है।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर सबसे ज्यादा बात करने

विद्यार्थियों में सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर सबसे ज्यादा बात किस व्यक्ति या उनका मित्र या परिवार किससे वह ज्यादा सहजता महसुस करता है।

क्रमांक	विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	मित्रो से	107	33
2.	सहकर्मियों से	69	22
3.	परिवार वालो से	37	12
4.	आनलाइन मित्रो से जिनसे आप कभी नहीं मिले	90	28
5.	अन्य	17	5
	कुल योग	**320**	**100**

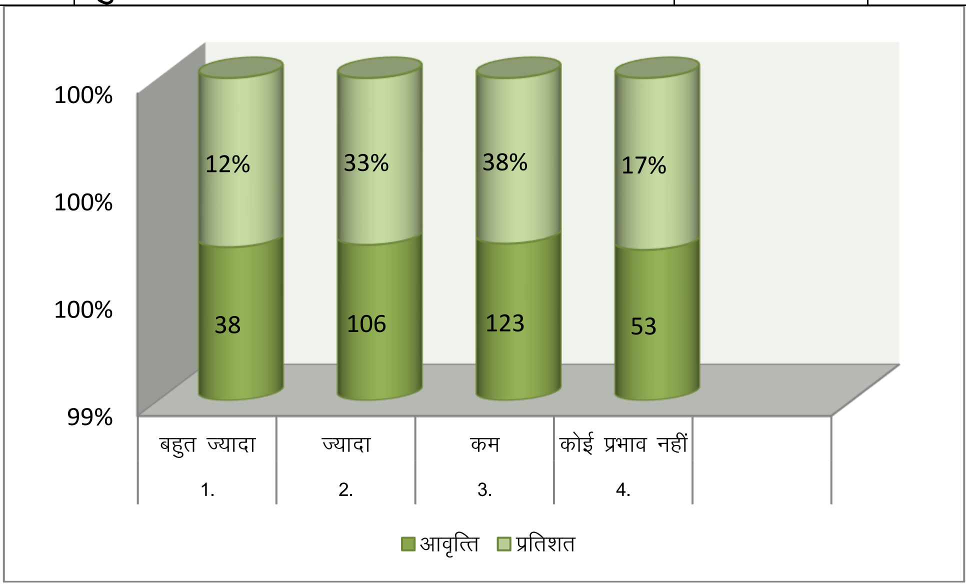

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है 33 प्रतिशत उत्तरदाता सोशल नेटवर्किंग साइट्स में मित्रो से बात करते हैं 22 प्रतिशत अपने सहकर्मियों से, 12 प्रतिशत परिवार वालों से, 28 प्रतिशत आनलाइन मित्रों से एवं 5 प्रतिशत अन्य है। उक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि उत्तदाताओं द्वारा सबसे ज्यादा अपने मित्रों से बात किया जाता है। और सबसे कम अन्य लोगों से बात किया जाता है।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग

बच्चों के लिए आज सोशल मीडिया एक ऐसा मनोरंजन साधन बनते जा रहा है जिससे वे हमेशा इससे जुड़े रहना चाहते है और इसका उपयोग करते है।

क्रमांक	विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	फेसबुक	80	25
2.	इन्स्टाग्राम	70	22
3.	व्हाट्सप	100	31
4.	टिवट्र	50	16
5.	अन्य	20	6
	कुलयोग	320	100

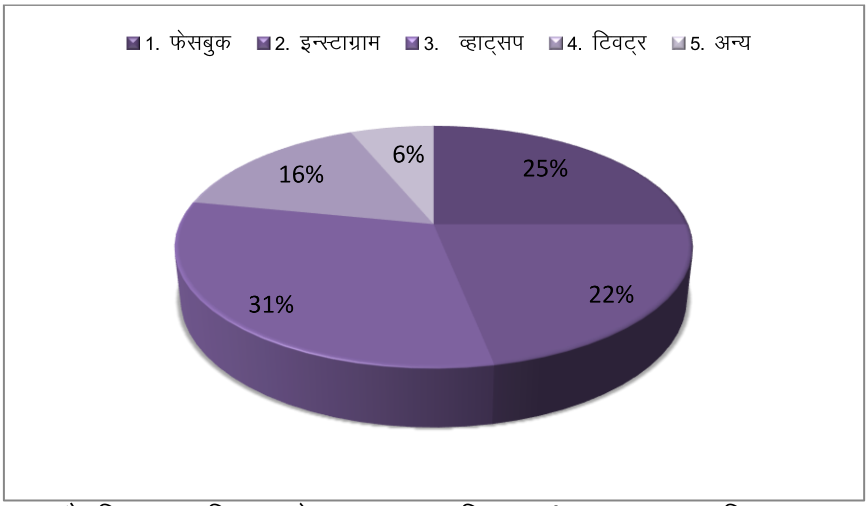

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 25 प्रतिशत फेसबुक, 22 प्रतिशत इंस्टाग्राम 31 प्रतिशत व्हाट्सप 16 प्रतिशत टिवट्र एवं 6 प्रतिशत अन्य सोशल साइट्स का उपयोग करते है। तथ्यों से स्पष्ट है कि ज्यादा उत्तरदाता व्हाट्सएप का उपयोग करते है।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर प्रतिदिन समय व्यतीत करने

विद्यार्थी जीवन में या किशोर अवस्था में जब हम सोशल मीडिया से जुड़ते है व अन्य सकारात्मक जानकारीयां लेने के लिए हमे सोशल साइट्स में समय देना पड़ता है।

क्रमांक	विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	0–2 घंटे	120	38
2.	2–4 घंटे	90	28
3.	4–6 घंटे	80	25
4.	6 घंटे से ज्योदा	30	9
	कुल योग	320	100

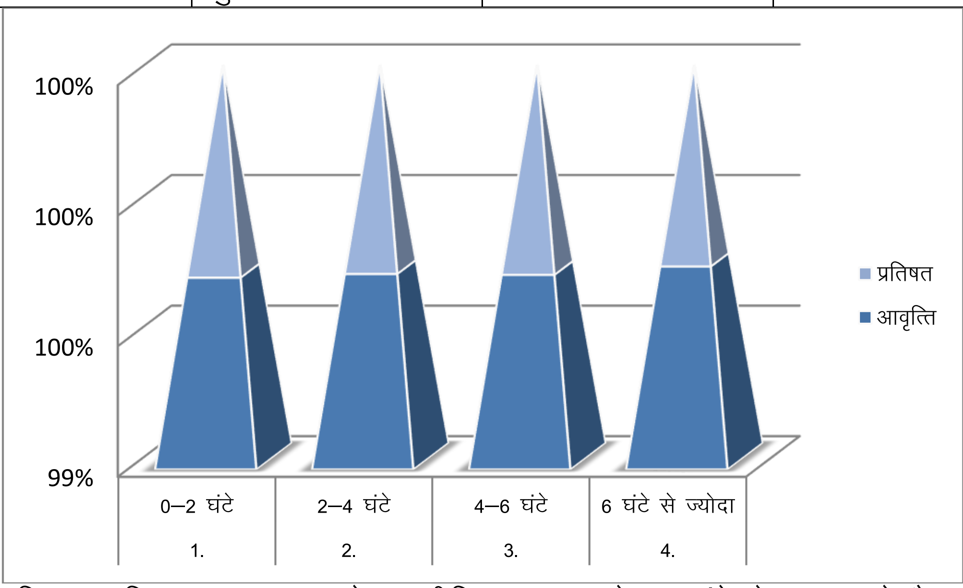

सारणी से स्पष्ट है कि 38 प्रतिशत उत्तरदाता सोशल मीडिया का उपयोग 2 घंटे से कम करते है। 28 प्रतिशत 2 से 4 घंटे सोशल मीडिया का उपयोग करते है 25 प्रतिशत उत्तरदाता 4 से 6 घंटे सोशल मीडिया पर बिताते है और 9 प्रतिशत उत्तरदाता 6 घंटे से उपर सोशल मीडिया का उपयोग करते है। अत सबसे ज्यादा 2 घंटे से कम उपयोग करने वाले ज्यादा है। उसके बाद 2 से 4 घंटे वाले आते हैं।

सोशल मीडिया में पोस्ट करने संबंधी तालिका

सोशल मीडिया में कोई पोस्ट अच्छी व समय में या सोशल मीडिया में जुड़ कर अपने विचारों का आदान प्रदान करके उन्हें अधिक आनंद की अनुभुति प्राप्त होती है।

कमांक	विकल्प	अवृत्ति	प्रतिशत
1.	कभी नहीं	110	34
2.	हर थोडी देर में	8	3
3.	प्रतिदिन	80	25
4.	सप्ताह में	122	38
	कुल योग	320	100

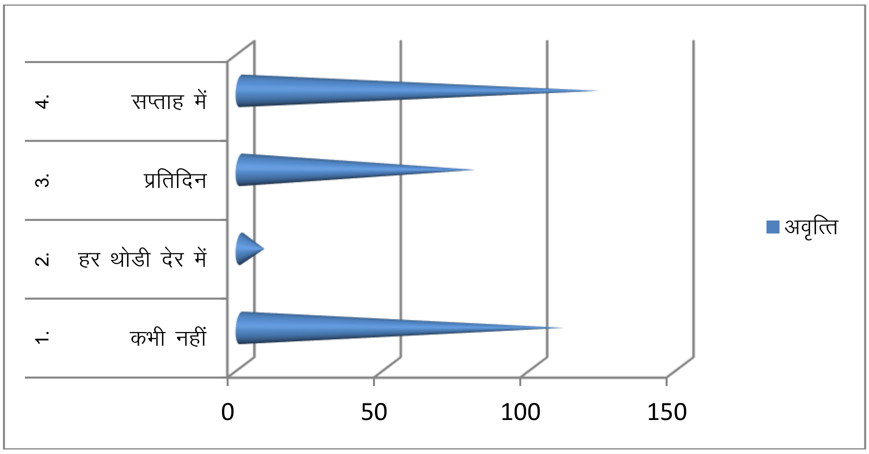

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि 34 प्रतिशत उत्तरदाता सोशल मीडिया पर कभी भी पोस्ट नहीं करते है। 3 प्रतिशत हर थोड़ी देर में सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हैं। 25 प्रतिशत प्रतिदिन एवं 38 प्रतिशत सप्ताह में सोशल मीडिया में पोस्ट करते है। अत उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि कुछ कभी भी सोशल मीडिया में पोस्ट नही करते है और सप्ताहिक उपयोग करने वाले की संख्या अधिक है।

सोशल साइट्स के प्रति आर्कषण व उनसे नई चीजे सीखन

कोई भी मनुष्य अगर कोई चीज सीखना है था उससे कोई चीज आकर्षित करती है। तो ऐसी महत्वपूर्ण होती है। जिससे हमें कोई नई व अच्छी चीजे सीखने मिले जिससे जैसे सोशल मीडिया की ओर आकर्षित होते है। व वह अपने जीवन के लिए या पढ़ाई (बच्चे) के लिए एक उत्तम साधन के रूप में कार्य करता है।

कमांक	विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	चैटिंग	68	21
2.	नए चित्र बनाना	85	27
3.	व्यापार	10	3
4.	शैक्षिक जानकारी	92	29
5.	मनोरंजन हेतु	65	20
	कुल योग	320	100

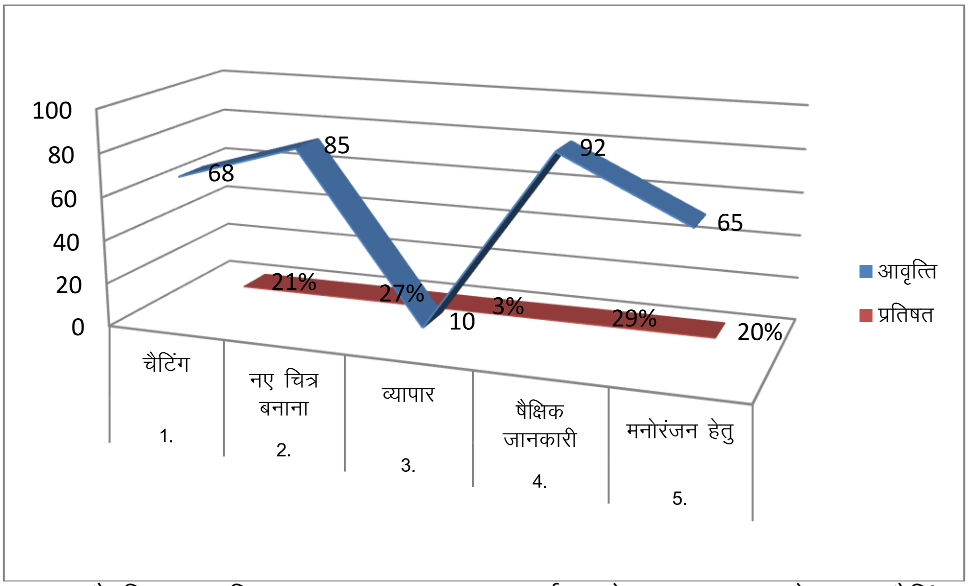

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि 21 प्रतिशत उत्तरदाता का आकर्शण सोशल साइट्स के उपर चैटिंग करना, 27 प्रतिशत का नए मित्र बनाना, 3 प्रतिशत का व्यापार संबंधी, 29 प्रतिशत का शैक्षिक जानकारी एवं 20 प्रतिशत का मनोरंजन होने संबंधी है।अत उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि 3 प्रतिशत ही व्यापार के लिए उपयोग करते है और सबसे ज्यादा 29 प्रतिशत शैक्षिक जानकारी हेतु इसका उपयोग करते है। तथा उनसे नई चीजे सीखने में सहायक प्राप्त होता है।

सोशल नेटवर्किंग साइट उत्तरदाताओं को अपनी गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करने

आज के युग में हमारा बहुत समय व सही जानकारीया सोशल मीडिया से प्राप्त होती है। जिससे हम अच्छी चीजों को सम्पूर्ण जानकारी के साथ उसे सोशल साइट्स से प्राप्त कर सकते है। जिससे हमें नई मित्र व विचार आदि का अवसर प्रदान करता है।

कमांक	विकल्प	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	सहमत	95	30
2.	असहमत	103	32
3.	पूर्णत सहमत	84	26
4.	पूर्णत असहमत	38	12
	कुल योग	320	100

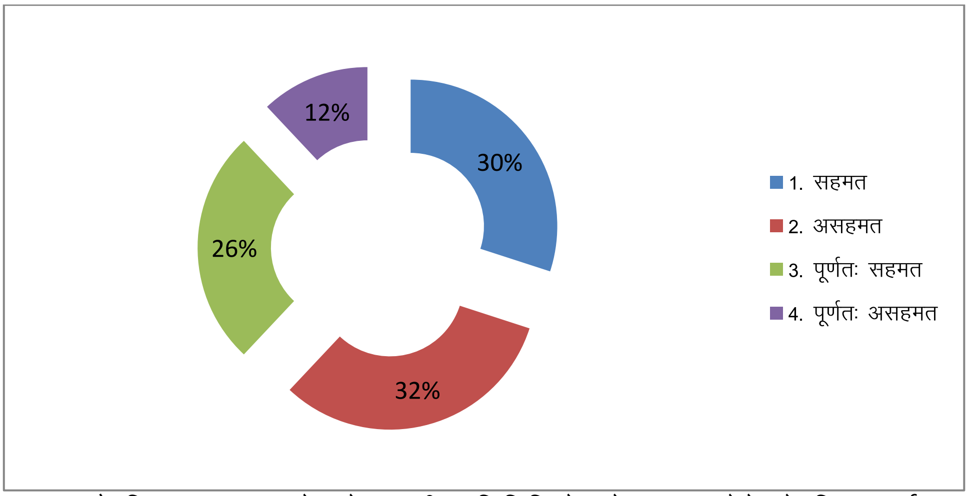

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं को अपनी गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करने में सहमत, 30 प्रतिशत, असहमत 32 प्रतिशत, 26 प्रतिशत प्रणफत सहमत, 12 प्रतिशत पूर्णत असहमत है। उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि 32 प्रतिशत असहमत है और 12 प्रतिशत पूर्णत असहमत है।

निष्कर्ष–

- विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव नकारात्मक प्रभावों से अधिक हैं।
- उत्तरदाताओं (विद्यार्थियों) की सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति अच्छी है।

सन्दर्भ–सूची

1- आडे, संतोष रामचन्द्र (2018) वैश्वीकरण में मीडिया की भूमिका इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस रिसर्च एण्ड डेवेलपमेण्ट वॉ. 3, इश्शू–4, पृ.63–66
2- कौर एवं हुसैन (2018) सामाजिक मीडिया का प्रचलन एवं युवाओं पर इन का प्रभाव इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यमिनिटि्ज एण्ड सोशल साइंस रिसर्च वॉ. 4 इश्शू–2, पृ. 30–34
कुसुम (2016) किशोरावस्था में बालिकाओं पर दूरदर्शन के प्रभाव (फैजाबाद के नगरीय क्षेत्र के सन्दर्भ में), इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवॉस एजुकेशन एण्ड रिसर्च वॉ. 1, इश्शू 2, पृ. 31–32
कुलश्रेष्ठ एस.पी. एण्ड सिंघल अनुपमा, शैक्षिक तकनकी के मूल आधार, अग्रवाल पब्लिकेशन, संजय पैले, आगरा।
3- खण्डेलवाल मधु (2018) शिक्षा का बदलता स्वरूप (सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विशेष संदर्भ में) इन्सपिरया–जर्नल ऑफ मॉर्डन मैनेजमेण्ट एण्ड इण्टरपेन्युरशिप, वॉल्यूम–08, नं. 01 पृ. 586–587
4- गुप्ता, योगेश कुमार (2017) भारत में टेलीविजन समाचार चैनलों की प्रभावशीलता (चयनित चैनलों का तुलनात्मक अध्ययन) इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च ग्रन्थालय–ए नॉलेज रिपोस्टिरी, वॉ 5, इश्शू–7, पृ. 79–88
5- कुमार, मनोज (2017) दैनिक जीवन में नैतिकता, आध्यात्मिकता एवं धर्म, नैतिकता से आध्यात्मिकता की ओर साहित्य एवं धर्म, प्रथम संस्करण युगान्तर पब्लिकेशन, वाराणसी, पृ. 215–221
6- उनियाल एवं अन्य (2016) जनपद देहरादूर में कम्प्यूटर एडेड लर्निग कार्यक्रम एवं छात्र संप्राप्ति कर कार्यक्रम का प्रभाव इण्टरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑफ मैनेजमेण्ट सोशियोलॉजी एण्ड ह्युमिनिट्ज वॉ. 7, इश्शू–2, पृ. 82–99
7- कालिया अनिता (2016) मीडिया और बदलती संस्कृति, अन्तर्राष्ट्रीय हीन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका वॉ 4, इश्शू–2, पृ. 30–31
8- कुमार यतेन्द्र (2015) भारत का बदलता परिवेश बदलती युवा जीवनशैली रिव्यू ऑफ रिसर्च वॉ. 4 इश्शू–7, पृ. 1–5
9- कुर्री के.पी., सेनगुप्ता, वी.एवं अग्रवाल सतीष (2015) संचार क्रान्ति पर युवा पीढ़ी पर प्रभाव इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसेस इन सोशल साइंसेस, वाल्यूम–3, इश्शू 2, पृ. 89–91
10- कठेरिया एवं अन्य 2013 टेलीविजन कार्यक्रमों का बच्चों पर प्रभाव (वर्धा शहर के विशेष संदर्भ में) इण्डियन स्ट्रीम्स रिसर्च जर्नल वॉल्यूम–3 इश्शू–7, पृ. 1–4
11- अर्चना (2011) ए स्टडी ऑफ मेण्टल हेल्थ ऑफ एडोलसेण्ट्स टू मोरल जॅजमेण्ट, इंटेलिजेन्स एण्ड, पर्सनॉलिटी, पी.एच–डी. एजुकेशन, डिपार्टमेण्ट ऑफ एजुकेशन एण्ड कम्युनिटी सर्विस पंजाब यूनिवर्सिटी, पटियाला।
12- कमल किशोर (2011) अनुदानित व स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन एम.एड. लघुशोध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।
13- अतिरिक्तांक प्रतियोगिता दर्पण– (2010) हिन्दी मासिक राष्ट्रीय पत्रिका, उपकार प्रकाशन आगरा। पृ.सं. 64
14- कुमार सुबोध (2010) वैदिक मानवीय मूल्यों की प्रासंगिकताः शिक्षा के सन्दर्भ में व्याख्याता दूरस्थ शिक्षा निदेशालय ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, इण्टरनेशनल सेमिनार ऑफ टीचर एजूकेशन फॉर पीस एण्ड हॉरमोनी।
15- कुमारी रीमा (2010) माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता तथा समाज के प्रति उनका दृष्टिकोण वी.ब. सिंह पू.वि.वि. जौनपुर अप्रकाशित शोध सं. 1323 पृ.सं. 126
16- गुप्ता एस.पी. (2010) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
17- गुप्ता एस.पी. (2009) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
18- ओड, एल. के. (2008) शिक्षा का दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान जयपुर हिन्दी ग्रन्थ एकाडमी।
19- अग्रवाल जे.सी. (2007) एजुकेशनल टेक्नोलॉजी एण्ड मैनेजमेण्ट, आगरा विनोद पुस्तक भण्डार पृ. 354–347।
20- गुप्ता एस.पी.(2006) सांख्यिकीय विधियॉ शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद